



कर्नाटक सरकार

हिंदी सुमन

प्रथम भाषा हिंदी

Hindi First Language

Part - 2



छठी कक्षा

Sixth Standard

Karnataka Textbook Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमणिका



क्र.सं	शीर्षक	विधा	पृ.सं
10.	सुख - दुःख	कविता	1
11.	भगत की गत	व्यंग्य कहानी	5
12.	धरती स्वर्ग समान	कविता	17
13.	विजयपुरा की सैर	यात्रा-वृत्तांत	23
14	परीक्षा	सामाजिक कहानी	31
	शिष्टाचार	पूरक वाचन	42
15.	सूरदास के पद	प्राचीन कविता	44
16.	लोकमान्य बालगंगाधर तिलक	व्यक्ति चित्रण	49
17.	पन्नाधाय का त्याग	एकांकी	56
	रचना		67

सुख - दुःख



- सुमित्रानंदन पंत

आशय : सुख और दुख शाश्वत या निरंतर नहीं होते। अतः दोनों को समान भाव से स्वीकार करने में ही जीवन की मधुरता है।

मैं नहीं चाहता चिर सुख,
चाहता नहीं अविरत दुःख,
सुख-दुःख की आँख मिचौनी
खोले जीवन अपना मुख।

सुख-दुःख के मधुर मिलन से
यह जीवन हो परिपूरन,
फिर घन में ओझल हो शशि
फिर शशि से ओझल हो घन।

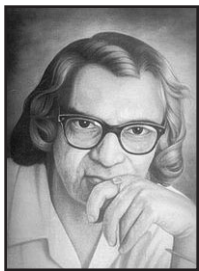
जग पीड़ित है अति दुःख से,
जग पीड़ित रे अति सुख से
मानव जग में बँट जावें
दुःख सुख से औ सुख दुःख से।

अविरत दुःख है उत्पीड़न,
अविरत सुख भी उत्पीड़न,

सुख-दुःख की निशा-दिवा में,
सोता जगता जग जीवन।

यह साँझ-उषा का आँगन,
आलिंगन विरह-मिलन का,
चिर हास अश्रुमय आनन
रे इस मानव-जीवन का।

कवि-परिचय



सुमित्रानंदन पंत जी का जन्म सन् १९०० में अल्मोडा जिले (उ.प्र.) के कौसानी गाँव में हुआ। प्रकृति के सुकुमार कवि के रूप में इन्हें जाना जाता है। छायावादी कवियों में पंत जी प्रमुख रहे। इनके काव्य की प्रमुख विशेषता प्रकृति चित्रण है। पंत जी की प्रमुख काव्य कृतियाँ-वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, स्वर्ण धूलि, उत्तरा, ग्राम्या, लोकायतन आदि हैं। 'चिदंबरा' काव्य-संग्रह के लिए इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 'कला और बूढ़ा चाँद' कविता-संग्रह पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। सन् १९७७ में इनका देहांत हुआ।

शब्दार्थ:

चिर - शाश्वत, सदा; अविरत - लगातार, निरंतर; घन - बादल, शशि - चाँद, ओझल - गायब, छिपना; पीड़ित - दुःखी, उत्पीड़न-कष्ट, निशा - रात्रि, दिवा - दिन, साँझ - शाम, उषा - प्रातः काल, सुबह; विरह - बिछुड़ना, हास - हास्य, अश्रुमय - आँसू से भरा, आनन - मुख, आलिंगन - गले मिलना, मुख - मुँह, परिपूरन - परिपूर्ण।

I. मौखिक प्रश्न :

- १) कवि क्या नहीं चाहता है ?
- २) जीवन कैसे परिपूर्ण होगा ?
- ३) अति सुख और अति दुःख से कौन पीड़ित है ?
- ४) जीवन किसका आँगन है ?

II. प्रश्नों का उत्तर लिखिए:

- १) कवि चिर सुख या दुःख क्यों नहीं चाहता है ?
- २) “घन में ओझल हो शशि और शशि से ओझल हो घन”
का क्या तात्पर्य है ?
- ३) मानव जग में सुख-दुःख कैसे बँट जाए ?

III. पंक्तियाँ पूर्ण कीजिए:

मैं नहीं
.....दुःख,
.....आँख.....
.....अपना मुख।

IV. पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए:

१. मानव जग में बँट जावें
दुःख सुख से औ सुख दुःख से।
२. चिर हास अश्रुमय आनन
रे इस मानव-जीवन का।

V. वाक्य में प्रयोग कीजिए:

१. अविरत २. परिपूर्ण ३. पीड़ित ४. जगना ५. आंगन

VI. कोई ऐसी तीन-तीन बातें लिखिए जिनसे आपको सुख और दुख का अनुभव होता हो:

सुख का अनुभव

१.

२.

३.

दुःख का अनुभव

१.

२.

३.

VII. कविता कंठस्थ कीजिए।

योग्यता विस्तार :

सुमित्रानंदन पंत की अन्य रचनाओं को पढ़िए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

भगत की गत



-हरिशंकर परसाई

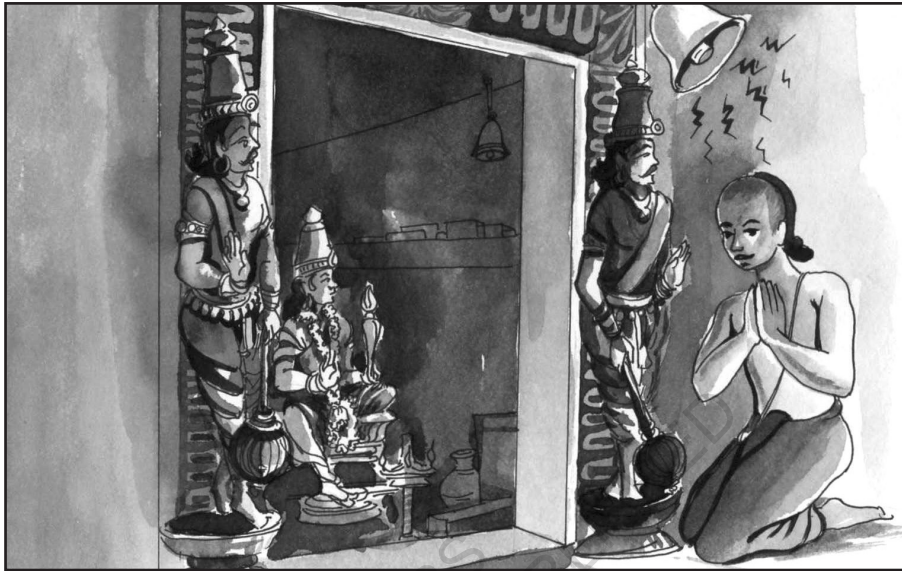
आशय : 'भगत की गत' हरिशंकर परसाई जी की हास्य और व्यंग्य प्रधान कहानी है। इसमें समाज में व्याप्त पाखंड पर तीव्र प्रहार किया गया है। ईश्वर की भक्ति वैयक्तिक श्रद्धा का भाव है, प्रदर्शन की वस्तु नहीं। प्रस्तुत कहानी का भगत भक्ति के नाम पर लाउड स्पीकर लगवाकर अपने आस-पास के लोगों का जीना हराम कर देता है। मनुष्य के स्वस्थ एवं सुंदर जीवन के लिए ऐसे ढोंग, आडंबरों, पाखंडों पर गंभीरतापूर्वक चिंतन करने की आवश्यकता है।

उस दिन जब भगत जी की मौत हुई थी, तब हमने कहा था - भगत जी स्वर्गवासी हो गए।

पर अभी मुझे मालूम हुआ कि भगत जी स्वर्गवासी नहीं, नरकवासी हुए हैं। मैं कहूँ, तो किसी को इस पर भरोसा नहीं होगा, पर यह सही है कि उन्हें नरक में डाल दिया गया है और उन पर ऐसे जघन्य पापों के आरोप लगाए गए हैं कि निकट भविष्य में उनके नरक से छूटने की कोई आशा नहीं है। अब हम उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करें, तो भी कुछ नहीं होगा। बड़ी-से-बड़ी शोक-सभा भी उन्हें नरक से नहीं निकाल सकती।

सारा मुहल्ला अभी भी याद करता है कि भगत जी मंदिर में आधी रात तक भजन करते थे। हर दो-तीन दिनों में वे किसी समर्थ श्रद्धालु से मंदिर में लाउड स्पीकर लगवा देते और उस पर अपनी मंडली समेत भजन करते। पर्व पर तो चौबीसों घंटे लाउड स्पीकर पर अखंड कीर्तन होता। एक-दो बार मुहल्लेवालों ने इस अखंड कोलाहल का विरोध किया तो भगत जी ने भक्तों की भीड़ जमा कर ली और दंगा कराने पर उतारू

हो गए। वे भगवान के लाउड स्पीकर पर प्राण देने और प्राण लेने पर तुल गए थे।



ऐसे ईश्वर भक्त जिन्होंने अरबों बार भगवान का नाम लिया, नरक में भेजे गए और अजामिला जिसने एक बार भूल से भगवान का नाम ले लिया था, अभी भी स्वर्ग के मजे लूट रहा है। अंधेर कहां नहीं है ?

भगत जी बड़े विश्वास से उस लोक पहुँचे। बड़ी देर तक यहाँ - वहाँ घूमकर देखते रहे। फिर एक फाटक पर पहुँचकर चौकीदार से पूछा, “स्वर्ग का प्रवेश-द्वार यही है न ?”

चौकीदार ने कहा, “हाँ, यही है।”

वे आगे बढ़ने लगे, तो चौकीदार ने रोका “प्रवेश-पत्र यानी टिकट दिखाइए पहले।”

भगत जी को क्रोध आ गया। बोले, “मुझे भी टिकट लगेगा यहाँ? मैंने कभी टिकट नहीं लिया। सिनेमा, मैं बिना टिकट देखता था और रेल में भी बिना टिकट बैठता था। कोई मुझसे टिकट नहीं माँगता।”

भगत जी दफ़्तर में पहुँचे। वहाँ कोई बड़े देवता फ़ाइलें लिए बैठे थे। भगत जी ने हाथ जोड़कर कहा, “अहा ! मैं पहचान गया। भगवान कार्तिकेय विराजे हैं।”

फाइल से सिर उठाकर उसने कहा, “मैं कार्तिकेय नहीं हूँ। झूठी चापलूसी मत करो। जीवन भर वहाँ तो कुकर्म करते रहे हो, और यहाँ आकर ‘हैं हैं’ करते हो। नाम बताओ।”

भगत जी ने नाम बताया, धाम बताया।

उस अधिकारी ने कहा, “तुम्हारा मामला बड़ा पेचीदा है। हम अभी तक तय नहीं कर पाए कि तुम्हें स्वर्ग दें या नरक। तुम्हारा फैसला खुद भगवान करेंगे।”

भगत जी ने कहा, “मेरा मामला तो बिल्कुल सीधा है। मैं सोलह आने धार्मिक आदमी हूँ। नियम से रोज़ भगवान का भजन करता रहा हूँ। कभी झूठ नहीं बोला और कभी चोरी नहीं की। मंदिर में इतनी स्त्रियाँ आती थीं, पर मैं सबको माता समझता था। मैंने कभी कोई पाप नहीं किया। मुझे तो आँख मूँदकर आप स्वर्ग भेज सकते हैं।”

अधिकारी ने कहा, “भगत जी, आपका मामला उतना सीधा नहीं है जितना आप समझ रहे हैं। परमात्मा खुद उसमें दिलचस्पी ले रहे हैं। आपको मैं उनके सामने हाज़िर किए देता हूँ।”

एक चपरासी, भगत जी को भगवान के दरबार में ले चला। भगत जी ने रास्ते से ही स्तुति शुरू कर दी। जब वे भगवान के सामने पहुँचे तो बड़े ज़ोर से भजन गाने लगे -

“हम भगतन के भगत हमारे,

सुन अर्जुन परतिज्ञा मेरी,

यह व्रत टरै न टारे” भजन पूरा करके गद्गद् वाणी में बोले, “अहा!

जन्म-जन्मांतर की मनोकामना आज पूरी हुई है। प्रभु, अपूर्व रूप है आपका। जितनी फोटो आपकी संसार में चल रही हैं, उनमें से किसी से नहीं मिलती।”

भगवान् स्तुति से बोर हो रहे थे। रुखाई से बोले, “अच्छा, अच्छा, ठीक है। अब क्या चाहते हो, सो बोलो।”

भगत जी ने निवेदन किया - “भगवन्, आपसे क्या छिपा है ? आप तो सबकी मनोकामना जानते हैं। मुझे प्रभु, स्वर्ग में कोई अच्छी-सी जगह दिला दीजिए।”

प्रभु ने कहा, “तुमने ऐसा क्या किया है जो तुम्हें स्वर्ग मिले ?”

भगत जी को इस प्रश्न से चोट लगी। जिसके लिए इतना किया, वही पूछता है कि तुमने ऐसा क्या किया ! भगवान् पर क्रोध करने से क्या फ़ायदा ! यह सोचकर भगत जी गुस्सा पी गए। दीन भाव से बोले, “मैं रोज़ आपका भजन करता रहा।”

भगवान् ने पूछा, “लेकिन लाउड स्पीकर क्यों लगाते थे ?”

भगत जी सहज भाव से बोले, “उधर सभी लाउड स्पीकर लगाते हैं। सिनेमा वाले, मिठाई वाले, काजल बेचने वाले; सभी उसका उपयोग करते हैं, तो मैंने भी कर लिया।”

भगवान् ने कहा, “वे तो अपनी चीज़ का विज्ञापन करते हैं। तुम क्या मेरा विज्ञापन करते थे ? मैं क्या कोई बिकाऊ माल हूँ?”

भगत जी सन्न रह गए। सोचा, भगवान् होकर कैसी बातें करते हैं !

भगवान् ने पूछा, “मुझे तुम अंतर्दामी मानते हो न ?”

भगत जी बोले, “जी हाँ !”

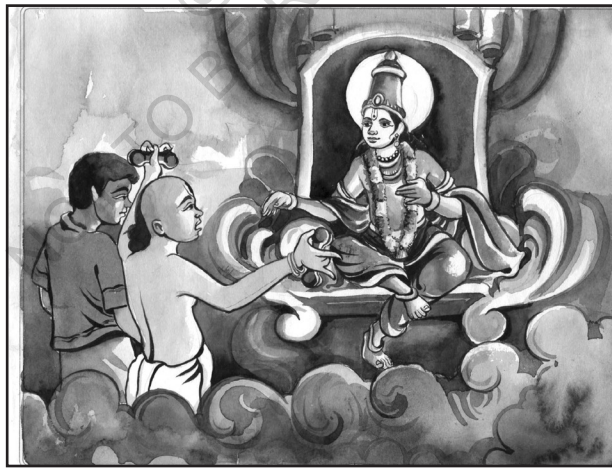
भगवान् ने कहा, “फिर अंतर्दामी को सुनाने के लिए लाउड स्पीकर

क्यों लगाते थे ? मैं क्या बहरा हूँ ? यह सब देवता मेरी हँसी उड़ाते हैं। मेरी पत्नी तक मज़ाक करती है कि यह भगत तुम्हें बहरा समझता है।”

भगत जी जवाब नहीं दे सके।

भगवान को और गुस्सा आया। वे कहने लगे, “तुमने कई साल तक सारे मुहल्ले के लोगों को तंग किया। तुम्हारे कोलाहल के मारे वे न काम कर सकते थे, न चैन से बैठ सकते थे और न सो सकते थे। उनमें से आधे तो मुझसे घृणा करने लगे हैं। सोचते हैं, अगर भगवान न होता तो यह भगत इतना हल्ला न मचाता। तुमने मुझे कितना बदनाम किया है !”

भगत ने साहस बटोरकर कहा, “भगवन्, आपका नाम लोगों के कानों में जाता था, यह तो उनके लिए अच्छा ही था। उन्हें अनायास पुण्य मिल जाता था।”



भगवान को भगत की मूर्खता पर तरस आया। बोले, “पता नहीं यह परंपरा कैसे चली कि भक्त का मूर्ख होना ज़रूरी है और किसने तुमसे कहा कि मैं चापलूसी पसंद करता हूँ ? तुम क्या यह समझते हो कि

तुम मेरी स्तुति करोगे तो मैं किसी बेवकूफ़ अफ़सर की तरह खुश हो जाऊँगा? मैं इतना बेवकूफ़ नहीं हूँ भगत जी कि तुम जैसे मूर्ख मुझे चला लें। मैं चापलूसी से खुश नहीं होता, कर्म देखता हूँ।”

भगत जी ने कहा, “भगवन्, मैंने कभी कोई कुकर्म नहीं किया।”

भगवान हँसे। कहने लगे, “भगत, तुमने आदमियों की हत्या की है। उधर की अदालत से बच गए, पर यहाँ नहीं बच सकते।”

भगत जी का धीरज अब छूट गया। वे अपने भगवान की नीयत के बारे में शंकालु हो उठे। सोचने लगे, यह भगवान होकर झूठ बोलता है। ज़रा तैश में कहा - “आपको झूठ बोलना शोभा नहीं देता। मैंने किसी आदमी की जान नहीं ली। अभी तक मैं सहता गया, पर इस झूठे आरोप को मैं सहन नहीं कर सकता। आप सिद्ध करिए कि मैंने हत्या की।”

भगवान ने कहा, “मैं फिर कहता हूँ कि तुम हत्यारे हो। अभी प्रमाण देता हूँ।”

भगवान ने एक अधेड़ उम्र के आदमी को बुलाया। भगत से पूछा, “इसे पहचानते हो ?”

“हाँ, यह मेरे मुहल्ले का रमानाथ मास्टर है। पिछले साल बीमारी से मरा था।” भगत ने विश्वास से कहा।

भगवान बोले, “बीमारी से नहीं, तुम्हारे भजन से मरा है। तुम्हारे लाउड स्पीकर से मरा है। रमानाथ, तुम्हारी मृत्यु क्यों हुई?”

रमानाथ ने कहा, “प्रभु, मैं बीमार था। डॉक्टरों ने कहा कि तुम्हें पूरी तरह नींद और आराम मिलना चाहिए। पर भगत जी के लाउड स्पीकर पर अखंड कीर्तन के मारे न मैं सो सका न आराम कर सका। दूसरे दिन मेरी हालत बिगड़ गयी और चौथे दिन मैं मर गया।”

भगत सुनकर घबरा उठे।

तभी एक बीस-इक्कीस साल का लड़का बुलाया गया। उससे पूछा, “सुरेंद्र, तुम कैसे मरे?”

“मैंने आत्महत्या कर ली थी।” उसने जवाब दिया।

“आत्महत्या क्यों कर ली थी ?” भगवान ने पूछा।

सुरेंद्र ने कहा, “मैं परीक्षा में फेल हो गया था।”

“परीक्षा में फेल क्यों हो गए थे?”

“भगत जी के लाउड स्पीकर के कारण मैं पढ़ नहीं सका। मेरा घर मंदिर के पास ही है न!”

भगत जी को याद आया कि इस लड़के ने उनसे प्रार्थना की थी कि कम-से-कम परीक्षा के दिनों में लाउड स्पीकर न लगाएँ।

भगवान ने कठोरता से कहा, “तुम्हारे पापों को देखते हुए, मैं तुम्हें नरक में डाल देने का आदेश देता हूँ।”

भगत जी ने भागने की कोशिश की, पर नरक के डरावने दूतों ने उन्हें पकड़ लिया।

अपने भगत जी, जिन्हें हम धर्मात्मा समझते थे; नरक भोग रहे हैं।

लेखक का परिचय:

हरिशंकर परसाई जी का जन्म २२ अगस्त सन् १९२४ को जमानी, मध्यप्रदेश में हुआ। व्यंग्य को हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित कराने में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। उन्होंने भारतीय जीवन के अंतर्विरोधों, विसंगतियों, भ्रष्टाचार, पाखंड तथा शोषण को व्यंग्य विधा के माध्यम से बड़ी कुशलतापूर्वक उद्घाटित किया है। उनके साहित्य सृजन का उद्देश्य ही विसंगतिहीन एवं शोषणरहित समाज की रचना करना है। उन्हें मध्यप्रदेश

साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं भारत सरकार की ओर से पद्मश्री सम्मान प्राप्त हुआ है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - 'भूत के पाँव पीछे', 'बेईमान की परत', 'सदाचार का ताबीज', 'विकलांग श्रद्धा का दौर', 'वैष्णव की फिसलन' (व्यंग्य); 'तट की खोज', 'रानी नागफनी की कहानी' (उपन्यास) आदि।

शब्दार्थ:

गत-दशा, अवस्था; भरोसा - विश्वास, जघन्य - निकृष्ट, बुरा; फाटक - प्रवेश द्वार, चौकीदार - पहरेदार, ठेलना - ढकेलना, चापलूसी - झूठी प्रशंसा, कुकर्म - बुरा काम, धाम - रहने का स्थान, पेचीदा - उलझन, चपरासी - नौकर, रुखाई - नीरस, सन्न - स्तब्ध, अंतर्धामी - ईश्वर, भीतर की बात जाननेवाला; कोलाहल - शोरगुल, बटोरना - इकट्ठा करना, समेटना; बेवकूफ़ - मूर्ख, तैश - गुस्सा, अधेड़ - प्रौढ़ावस्था।

मुहावरे :

मज़ा लूटना	- सुख भोगना
सोलह आने	- पूर्णतः, बिलकुल
आँख मूँदकर	- निश्चित होकर
गुस्सा पी जाना	- गुस्सा आने पर भी चुप रह जाना, गुस्सा प्रकट न करना

टिप्पणी :

अरब - सौ करोड़

अजामिला - पुराण के अनुसार एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम लेने से तर (उद्धार) गया था।

कार्तिकेय - शिव-पार्वती का पुत्र तथा देवताओं का सेनापति।

I. मौखिक प्रश्न :

- १) भगत जी मंदिर में क्या करते थे ?
- २) स्वर्ग के द्वार पर भगत को चौकीदार ने क्यों रोका ?
- ३) भगवान को भगत पर क्यों तरस आया ?
- ४) भगवान क्या देखता है ?
- ५) सुरेन्द्र परीक्षा में क्यों फ़ेल हो गया था?

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- १) स्वर्ग के द्वार पर भगत को किसने रोका ?
- २) अधिकारी ने भगत को किनके सामने हाज़िर किया ?
- ३) भगवान किस बात से बोर हो रहे थे ?
- ४) भगवान के किस प्रश्न से भगत जी को चोट लगी ?
- ५) झूठी चापलूसी से किनको खुश नहीं कर सकते ?
- ६) सुरेन्द्र का घर कहाँ था ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए :

- १) भगत जी भगवान की पूजा किस प्रकार करते थे ?
- २) भगत ने प्रवेशपत्र (टिकट) के बारे में चौकीदार से क्या कहा?
- ३) भगत जी को भगवान के सामने क्यों उपस्थित होना पड़ा?
- ४) रमानाथ और सुरेन्द्र की मृत्यु के लिए कौन ज़िम्मेदार था? कैसे?
- ५) भगत जी को स्वर्ग में प्रवेश क्यों नहीं मिला ?

IV. किसने, किससे कहा?:

- १) “मुझे भी टिकट लगेगा यहाँ ?”
- २) “मैं सोलह आने धार्मिक आदमी हूँ।”
- ३) “भगवन, मैंने कभी कोई कुकर्म नहीं किया।”
- ४) “बीमारी से नहीं, तुम्हारे भजन से मरा है।”
- ५) “मैं परीक्षा में फेल हो गया था।”

V. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

- १) “अहा! मैं पहचान गया। भगवान विराजे हैं।”
- २) “तुम्हारा मामला बड़ा है।”
- ३) “तुमने मुझे कितना किया है।”
- ४) “भगवन, मैंने कभी कोई नहीं किया।”
- ५) अपने भगत जी, जिन्हें हम समझते थे ;
नरक भोग रहे हैं।”

VI. अन्य वचन रूप लिखिए :

- | | |
|--------------|------------|
| १) दिन | ६) बीमारी |
| २) मंडली | ७) मुहल्ले |
| ३) दरबार | ८) सभा |
| ४) साल | ९) आदमी |
| ५) परीक्षाएँ | १०) टिकटें |

VII. सही विलोम शब्द चुनकर लिखिए:

(नरकवासी, सच्ची, सुकर्म, टेढ़ा, गैर हाज़िर, निंदा, खुला, नुकसान, प्रेम, बुद्धिमानी)

१. सीधा	X	६. मूर्खता	X
२. स्तुति	X	७. कुकर्म	X
३. घृणा	X	८. छिपा	X
४. फायदा	X	९. झूठी	X
५. स्वर्गवासी	X	१०. हाज़िर	X

VIII. अब 'आने' का ज़माना नहीं, रुपये, पैसों का ज़माना है।

एक आना = छः पैसे

सोलह आने = ९६ पैसे - इसीको पूर्ण करके १०० पैसे = आज का एक रुपया है ।

आप आज का हिसाब लिखिए:

१. चार आने =
२. आठ आने =
३. बारह आने =
४. सोलह आने =

IX. वाक्यांश के लिए एक शब्द लिखिए:

१. जो सुन नहीं सकता -
२. जो देख नहीं सकता -
३. जो बोल नहीं सकता -
४. जो एक आँखवाला हो -

योग्यता विस्तार :

कोई एक हास्य कहानी पढ़िए और सुनाइए।

धरती स्वर्ग समान



- गोपालदास 'नीरज'

आशय : सभी में ईश्वर है। समाज की विसंगतियों, विरोधाभासों एवं निम्न वर्ग की दयनीय स्थितियों का मर्मस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत कविता में अंकित है।

जाति-पाँति से बड़ा धर्म है,
धर्म-ध्यान से बड़ा कर्म है,
कर्मकांड से बड़ा मर्म है,
मगर सभी से बड़ा यहाँ यह छोटा-सा इनसान है,
और अगर वह प्यार करे तो धरती स्वर्ग समान है।
जितनी देखी दुनिया सबकी देखी दुलहन ताले में,
कोई कैद पड़ा मस्जिद में कोई बंद शिवाला में,
किसको अपना हाथ थमा दूँ, किसको अपना मन दे दूँ?
कोई लूटे अँधियारे में, कोई ठगे उजाले में,



सबका अलग-अलग ठनगन है,
 सबका अलग-अलग वंदन है,
 सबका अलग-अलग चंदन है,
 लेकिन सबके सिर के ऊपर नीला एक वितान है,
 फिर जाने क्यों यह सारी धरती लहू-लुहान है?
 हर बगिया पर तार कँटीले, हर घर घिरा किवाड़ों से,
 हर खिड़की पर परदे, घायल आँगन हर दीवारों से,
 किस दरवाजे करूँ वंदना, किस देहरी मत्था टेकूँ,
 काशी में अँधियारा सोया, मथुरा पटी बज़ारों से,
 हर घुमाव पर छीन-झपट है,
 इधर प्रेम, तो उधर कपट है,
 झूठ किए सच का घूँघट है,
 फिर भी मनुज अश्रु की गंगा, अब तक पावन प्राण है,
 और नहीं ले उसमें तो फिर मानव ही भगवान है।

कवि परिचय:



गोपालदास सक्सेना जी का जन्म ४ जनवरी सन् १९२४ में उत्तर प्रदेश के इटावा स्थित एक छोटे से गाँव पुरावली में हुआ। इन्हें सन् २००७ में पद्मभूषण की उपाधि से विभूषित किया गया। इन्होंने अपने काव्य नाम 'नीरज' से ही कविताएँ लिखी हैं। ये अलीगढ़ में हिन्दी के प्रोफेसर रहे हैं। इन्होंने हिन्दी फिल्मों के लिए गीत भी लिखे हैं।

ये दार्शनिक और शिक्षक हैं। ये प्रेम, करुणा और पीड़ा के साथ-साथ विद्रोह के भी कवि माने जाते हैं।

‘नीरज’ की कविताओं के संग्रह ‘नीरज की पाती’, ‘बादलों से सलाम लेता हूँ’, ‘गीत जो गाए नहीं’ हैं। मस्ती और मानवीयता के कवि ‘नीरज’ गीतकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। सरस भाषा, संगीतात्मकता एवं कोमल प्रतीक इनकी कविताओं की विशेषताएँ हैं।

शब्दार्थ :

कर्मकांड - पाखंड, मर्म - तत्त्व, रहस्य; शिवाला - मंदिर, ठगना - धोखा देना, ठनगन - अधिक पाने के लिए हठ, देहरी - दरवाजे के चौखट की नीचे की लकड़ी, वितान - मंडप, लहू-लुहान - रक्त में डूबा, मनुज - मनुष्य, पावन - पवित्र।

टिप्पणी :

दुलहन ताले में-दुलहन कोठरी में/दखाजे के पीछे बंद है।

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न :

- १) धर्म किससे बढ़ा है ?
- २) कर्मकांड से बढ़ा क्या है ?
- ३) लोग कब लूटते हैं ?
- ४) लोग कब ठगे जाते हैं ?
- ५) सबके सिर पर क्या फैला हुआ है ?
- ६) मथुरा किससे पटी हुई है ?
- ७) झूठ ने किसका घूँघट धारण किया है ?

II. प्रश्नों का उत्तर लिखिए:

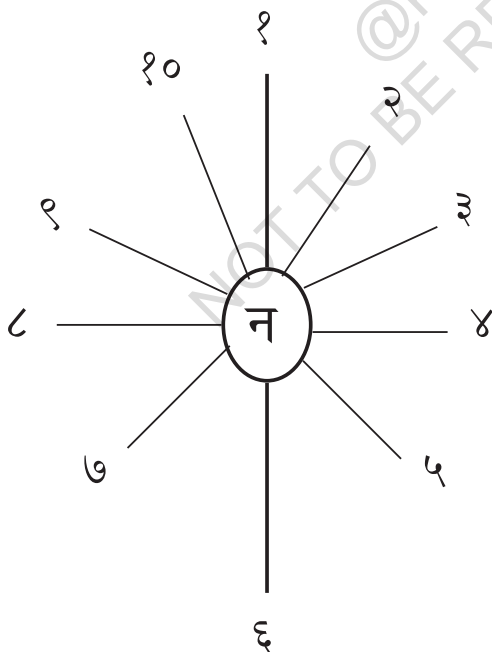
- १) धर्म, कर्म और मर्म से बढ़कर क्या है?
- २) इंसान धरती को स्वर्ग समान कैसे बना सकता है?

- ३) 'ठनगन', 'वंदन' और 'चंदन' से कवि का तात्पर्य क्या है?
- ४) कवि मानव को किन बेड़ियों से मुक्त होने को कह रहे हैं?
- ५) कवि ने यथार्थ विसंगतियों का वर्णन किस प्रकार किया है?

III. भाव स्पष्ट कीजिए -

हर बगिया पर
 दीवारों से,
 किस दरवाजे
 पटी बजारों से।

IV. 'न' से अंत होनेवाले शब्दों को कविता से ढूँढ़कर लिखिए:



उदा: १. इनसान

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

१०.

V. पूजा-प्रार्थना स्थलों के नाम लिखिए:

जैसे: बौद्ध - बुद्ध विहार

१. हिंदू -
२. इस्लाम -
३. सिख -
४. ईसाई -
५. जैन -

VI. पर्यायवाची शब्द लिखिए:

जैसे: मनुज - मनुष्य, मानव

१. इन्सान -
२. उजाला -
३. लहू -
४. दरवाज़ा -
५. बगीचा -

VII. कविता में दो पंक्तियों का तुकांत है तथा विशेष रूप से तीन पंक्तियों का तुकांत भी है। इसे पहचानकर लिखिए:

- | | | |
|----------|---------|---------|
| १. धर्म | - | - |
| २. ठनगन | - | - |
| ३. झपट | - | - |
| ४. इनसान | - | - |
| ५. वितान | - | - |
| ६. पावन | - | - |

योग्यता विस्तार :

राष्ट्रीयता का भाव प्रकट करनेवाली संक्षिप्त कविताओं का संग्रह कीजिए।

विजयपुरा की सैर

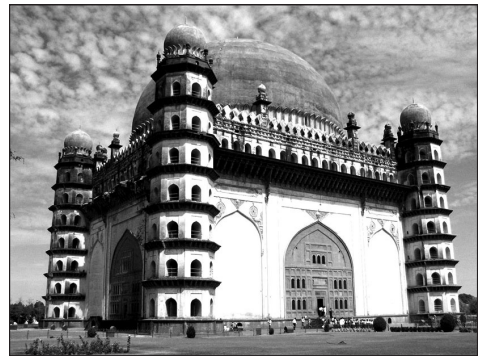


-संकलित

आशय : 'विजयपुरा' इतिहास प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। यह 'बिजापुर' के नाम से जाना जाता था। इस पाठ द्वारा विजयपुरा और उसके आस-पास की जगहों का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

सारी दुनिया के अत्यंत विशाल राष्ट्रों में भारत का स्थान सातवाँ है। इस विशाल राष्ट्र में असंख्य दर्शनीय स्थल हैं। उनमें से कर्नाटक राज्य का विजयपुरा शहर भी एक है। यह शहर बेंगलूरु के पश्चिमोत्तर दिशा में करीब ५७९ किलो मीटर की दूरी पर बसा हुआ है। यह आदिलशाह की राजधानी के रूप में विश्वविख्यात था। आजकल यह भारत देश के प्रमुख दर्शनीय प्रवासी केंद्रों में से एक है।

विजयपुरा तथा उसके आस-पास करीब ३०० से भी ज़्यादा दर्शनीय स्थल हैं। इन्हें देखने के लिए नित्य देश-विदेशों से असंख्य पर्यटक व सैलानी यहाँ आया करते हैं। विजयपुरा शहर के चारों ओर सवा छः मील लंबी प्राचीर है। यह पत्थरों से बाँधी गयी है। इस शहर का बड़ा हिस्सा किले की चारदीवारी के अंदर बसा हुआ है। इस किले की दीवार के बाहर चारों ओर ४० से ५० फुट चौड़ी खाई बनी हुई है। इस तरह यह शहर एक किले की तरह है। इसके अंदर प्रवेश करने के लिए पाँच दरवाज़े हैं। पश्चिम में मक्का दरवाज़ा, पश्चिमोत्तर दिशा में शाहपुर

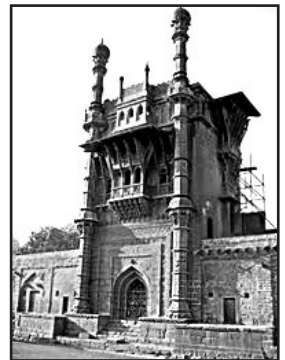


दरवाज़ा, उत्तर में बहमनी दरवाज़ा, पूर्व में अलीपुर दरवाज़ा है तो दक्षिण में मनगोली दरवाज़ा है।

विजयपुरा के अनेक दर्शनीय स्थानों तथा इमारतों की वास्तुकला अनुपम व अपूर्व है। यहाँ स्थित गोलगुंबज संसार भर में प्रसिद्ध है। मुहम्मद आदिलशाह ने इसे बनाया था। गोलगुंबज एशिया खंड का प्रथम व दुनिया भर का दूसरा विशाल गुंबज है। इसकी दीवारों में किसी भी तरह की आवाज़ करीब दस बार गूँजती है। यदि दीवार के नज़दीक फुसफुसाते हैं तो अत्यंत धीमी आवाज़ भी बड़ी दूर की दीवार में स्पष्ट सुनायी देती है। इसलिए यह गुंबज 'फुसफुसाने वाला गुंबज' (व्हिस्परिंग) नाम से प्रसिद्ध हो चुका है। गुंबज के अहाते में मुहम्मद तथा उसके निकटवर्तियों की कृतक समाधियाँ हैं। उनके निचले हिस्से में वास्तविक समाधियाँ हैं।

मुहम्मद आदिलशाह अपनी मृत्यु के बाद अपनी देह को अत्यंत पवित्र स्थान में दफ़नाने की इच्छा रखते थे। इसलिए उन्होंने ईराक से हज़रत मुहम्मद साहब के नवासे हुसेन साहब की समाधि के पास से पवित्र मिट्टी मँगवा ली थी और उसे अपनी मृत्यु के बाद अपनी कब्र में डाल कर दफ़नाने की हिदायत दी थी। इस तरह इस समाधि पर बाँधा गया यह भव्य गुंबज भारत व कर्नाटक की शान व आन बन गया है। यहाँ नित्य दर्शकों का मेला-सा लगा रहता है। इससे हमारी साख भी देश-विदेशों में फैल रही है।

विजयपुरा में जामिया मस्जिद, चंपा महल, नव गुंबज, जोड़ गुंबज, इब्राहिम रोज़ा, उपली बुर्ज व मेहतर महल आदि दर्शनीय स्थान हैं। मेहतर महल बंधवाने के पीछे एक कथा है। कहते हैं कि इब्राहिम आदिलशाह कुछ रोग से पीड़ित था। एक ज्योतिषी ने उसे बताया था कि “सुबह सवेरे जागते ही तुम सबसे



पहले जिस आदमी को देखोगे उसे काफ़ी धन देने से तुम्हारा कुछ रोग दूर होगा।” दूसरे दिन सुबह सवेरे इब्राहिम आदिलशाह ने एक मेहतर को देखा। उसे काफ़ी धन दिया। मेहतर ने उस धन से सुंदर मेहतर महल बँधवाया। यह महल विजयपुरा के सुंदर महलों में से एक है।

शब्दार्थ :

असंख्य - अनगिनत, विख्यात - प्रसिद्ध, मशहूर; दर्शनीय - देखने लायक, पर्यटक - यात्री, सैलानी - खूब घूमने-फिरनेवाला, घुमक्कड़; प्राचीर - दीवार, खाई - खंदक, गड़ढ़ा; वास्तुकला - भवननिर्माण कला, अनुपम - बेजोड़, गूँजना - प्रतिध्वनित होना, फुसफुसाना - बहुत धीमी आवाज़ में बोलना, कृतक - कृत्रिम, दफ़नाना - मृतक को ज़मीन में गड़ना, हिदायत - निर्देश, सूचना; नवासा - पुत्री का बेटा, नाती।

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न :

- १) दुनिया के विशाल राष्ट्रों में भारत का कौन-सा स्थान है ?
- २) गोलगुंबज किस शहर में है ?
- ३) विजयपुरा के चारों ओर क्या है ?
- ४) विजयपुरा शहर में प्रवेश करने के लिए कितने दरवाज़े हैं ?
- ५) गोलगुंबज किस नाम से प्रसिद्ध हो चुका है ?

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

- १) विजयपुरा व बेंगलूरु के बीच कितनी दूरी है ?
- २) विजयपुरा किसकी राजधानी थी ?
- ३) विजयपुरा का पुराना नाम क्या था ?

- ४) विजयपुरा के आसपास कितने दर्शनीय स्थल हैं ?
- ५) इन्हें देखने के लिए कौन आते हैं ?
- ६) विजयपुरा के चारों ओर क्या है ?
- ७) उत्तर दिशा में स्थित दरवाज़े का क्या नाम है ?
- ८) गुंबज किस नाम से मशहूर है ?
- ९) इब्राहिम आदिलशाह किस रोग से पीड़ित था ?

III. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

- १) भारत की विशेषता क्या है ?
- २) विजयपुरा में हमेशा यात्रियों का मेला-सा क्यों लगा रहता है ?
- ३) यह शहर किले की तरह क्यों है ?
- ४) गोलगुंबज की विशेषता क्या है ?
- ५) मुहम्मद आदिलशाह की इच्छा क्या थी? और उसने इसके लिए क्या किया ?
- ६) विजयपुरा में कौन-कौन-से स्थान देखने लायक हैं ?
- ७) मेहतर महल किस तरह बना ?

IV. निम्न कथन किसने किससे कहा ? पाठ का नाम क्या है ?

“सुबह-सवेरे जागते ही तुम सबसे पहले जिस आदमी को देखोगे उसे काफी धन देने से तुम्हारा कुछ रोग दूर होगा।”

V. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

असंख्य, दर्शनीय, प्राचीर, खाई, दफ़नाना, हिदायत

VI. विलोम रूप लिखिए :

पश्चिम, पुराना, ज्यादा, नज़दीक, पवित्र

VII. अन्य वचन रूप लिखिए :

राजधानी, दिशा, देश, दीवार, समाधि, महल

VIII. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

विख्यात, बसना, दर्शनीय, प्राचीर, दफ़नाना, कब्र

योग्यता विस्तार:

मंड्या जिले के श्रीरंगपट्टणा किले के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

भाषा-बोध

संधि

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास पास आने के कारण उनके मेल से जो विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।

संधि तीन प्रकार की है।

- १) स्वर संधि २) व्यंजन संधि ३) विसर्ग संधि

स्वर संधि

दो स्वरों के मेल से जो विकार होता है उसे स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि के पाँच प्रकार हैं -

- १) दीर्घ संधि २) गुण संधि ३) वृद्धि संधि
४) यण संधि ५) अयादि संधि।

(यहाँ पाठ्य हेतु ३ प्रकारों का विवरण दिया जा रहा है।)

यदि दो सवर्ण स्वर पास पास आवे तो दोनों मिलकर दीर्घ स्वर संधि होती है।

उदा:

अ + अ = आ	राम + अवतार = रामावतार
अ + आ = आ	देव + आलय = देवालय
आ + अ = आ	विद्या + अभ्यास = विद्याभ्यास
आ + आ = आ	महा + आशय = महाशय
इ + इ = ई	गिरि + इंद्र = गिरींद्र
इ + ई = ई	गिरि + ईश = गिरीश

ई + इ = ई

ई + ई = ई

उ + उ = ऊ

उ + ऊ = ऊ

ऊ + उ = ऊ

ऊ + ऊ = ऊ

मही + इंद्र = महींद्र

जानकी + ईश = जानकीश

भानु + उदय = भानूदय

लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

वधू + उत्सव = वधूत्सव

भू + ऊर्जित = भूर्जित

यदि अ, आ के आगे इ, ई रहे तो दोनों मिलकर ए; उ, ऊ रहे तो दोनों मिलकर ओ; और ऋ रहे तो अर हो जाता है। इस विकार को गुण संधि कहते हैं।

उदा : अ + इ = ए

अ + ई = ए

आ + इ = ए

आ + ई = ए

अ + उ = ओ

अ + ऊ = ओ

आ + उ = ओ

अ + ऋ = अर

अ + ॠ = अर

देव + इंद्र = देवेंद्र

सुर + ईश = सुरेश

महा + इंद्र = महेंद्र

रमा + ईश = रमेश

चंद्र + उदय = चंद्रोदय

समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि

महा + उत्सव = महोत्सव

सप्त + ऋषि = सप्तर्षि

देव + ऋषि = देवर्षि

यदि अ, आ के आगे ए, ऐ हो तो दोनों मिलकर ऐ और ओ, औ रहे तो दोनों मिलकर औ होता है। इस विकार को वृद्धि संधि कहते हैं।

उदा : अ + ए = ऐ

आ + ए = ऐ

अ + ऐ = ऐ

आ + ऐ = ऐ

अ + ओ = औ

आ + ओ = औ

अ + औ = औ

आ + औ = औ

एक + एक = एकैक

सदा + एव = सदैव

मत + ऐक्य = मतैक्य

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

जल + ओध = जलौध

महा + ओज = महौज

परम + औषध = परमौषध

महा + औषध = महौषध



आशय: आदमी अपने असली गुण को कितना भी छिपाने की कोशिश करे, वह किसी-न-किसी समय प्रकट हो ही जाता है। सच्चाई, ईमानदारी, मेहनत और साहस का फल हमेशा मीठा ही होता है।

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए, तो उन्हें परमात्मा की याद आयी। जाकर उन्होंने महाराज से विनय की, “दीनबन्धु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की; अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता है। दूसरे, अब मेरी अवस्था भी ढल गयी, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रह गयी। कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे सारी ज़िन्दगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।”

राजा साहब अपने अनुभवशील, नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न माना, तो हारकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली ; पर शर्त यह लगा दी कि रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में विज्ञापन निकला, ‘रियासत देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की ज़रूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह ज़रूरी नहीं है कि ग्रेजुएट हो, मगर उनका हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है। मंदाग्री के मरीजों को यहाँ तक आने का कष्ट उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों की रहन-सहन, आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम, परन्तु कर्तव्य

का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, वे उच्च पद पर सुशोभित होंगे।’

(2)

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की कैद नहीं, केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नये और रंगबिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता; कोई पंजाब से चला आता था, तो कोई मद्रास से। कोई नये फ़ैशन का प्रेमी था, तो कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पंडितों और मौलवियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम पर रोया करते थे, यहाँ उसकी कोई ज़रूरत ही न थी। रंगीन अमामे (पगडियाँ), चोगे और नाना प्रकार के अंगरखे और कनटोप देवगढ़ में अपनी सजधज दिखाने लगे। लेकिन सबसे विशेष संख्या ग्रजुएटों की थी, क्योंकि सनद की कैद न होने पर भी सनद से परदा तो ढका रहता है।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबन्ध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए रोज़ेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर ‘अ’ नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए उषा के दर्शन करते थे। मिस्टर ‘ब’ को हुक्का पीने की लत थी, पर आजकल बहुत रात गये,



किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मिस्टर 'द,' 'स', और 'ज' से उनके घरों के नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बगैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, 'हक्सले' के उपासक थे। मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी। मिस्टर 'ल' को किताबों से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े धर्मग्रन्थ खोले पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बातचीत कीजिये, वही नम्रता और सदाचार का देवता ही मालूम होता था। शर्मा जी बड़ी रात ही से वेद-मंत्र पढ़ने लगते थे और मौलवियों को तो नमाज़-तलावत के सिवा और कोई काम ही न था। लोग समझते थे कि एक महीने की झंझट है, किसी तरह काट लें; जो कहीं कार्य सिद्ध हो गया, तो कौन पूछता है।

लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

(3)

एक दिन इन फैशनवालों को सूझा कि आपस में हाँकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हाँकी के मंजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें? संभव है, कुछ हाथों की सफाई ही काम कर जाए।

चलिए, तय हो गया। कोर्ट बन गया, खेल शुरू हुआ, और गेंद किसी दफ्तर के अप्रेंटिस की तरह ठोकरें खाने लगी। रियासत देवगढ़ में यह खेल बिल्कुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भलेमानुस शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे। खेल बड़े उत्साह के साथ जारी था। धावे से लोग जब गेंद लेकर तेज़ी से उड़ते, तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर के खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे, मानों लोहे की दीवार है।

संध्या तक यही धूम-धाम रही। लोग पसीने से तर हो गये। खून की गर्मी आँख और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गये, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था।

खेल अभी बंद ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिये उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहिये को हाथों से ढकेलता, लेकिन बोझ तो अधिक था और बैल कमज़ोर थे। गाड़ी ऊपर को न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुंझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती।



बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता, मगर वहाँ कोई सहायक नज़र न आता था। गाड़ी को अकेला छोड़कर वह कहीं जा भी न सकता। बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच में खिलाड़ी हाथों में डंडे लिये झूमते-झूमते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ़ सहमी हुई आँखों

से देखा; परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा, मगर बंद आँखों से, जिनमें सहानुभूति का नाम न था। उनमें स्वार्थ था, मद था, मत्सर था, उदासीनता थी; वात्सल्य का नाम तक न था।

(4)

लेकिन उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य भी था, जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हाँकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लगी हुई थी। लंगड़ाता हुआ वह धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। वह ठिठक गया। उसे किसान को देखते ही सब बात ज्ञात हो गयी। डंडा एक किनारे रख दिया, कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला, "तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"

किसान ने देखा कि एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। डरकर बोला, "हुजूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?"

युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो ; मैं पहियों को ढकेलता हूँ, अभी गाड़ी ऊपर आती है।"

किसान गाड़ी पर जा बैठा, युवक ने पहियों में ज़ोर लगाकर खिसकाया। कीचड़ बहुत ज्यादा था। वह घुटने तक ज़मीन में गड़ गया। लेकिन उसने हिम्मत न हारी। उसने फिर ज़ोर किया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा, बैलों को सहारा मिला, उनकी भी हिम्मत बँध गयी, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार जो ज़ोर दिखाया, बस, गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और बोला, "महाराज! आपने आज मुझे उबार लिया। नहीं तो, सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा, "अब, मुझे कुछ इनाम देते हो ?"

किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

युवक ने किसान की तरफ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, क्या यह सुजानसिंह तो नहीं हैं ? आवाज़ मिलती है, चेहरा-मुहरा भी वही है। किसान ने उसकी ओर तीव्र दृष्टि के साथ देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुस्कुराकर बोला, "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

(5)

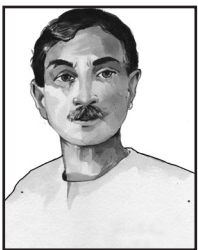
निदान, महीना पूरा हुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से ही अपनी-अपनी किस्मत का फैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया, प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते थे। नहीं मालूम आज किसके नसीब जागेंगे, न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी। संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग, राजा के कर्मचारी और दरबारी और दीवानी के उम्मीदवार, सब रंग-बिरंग की सज-धज बनाये दरबार में आ विराजे।

तब सरदार सुजनसिंह ने खड़े होकर कहा, "मेरे दीवानी के उम्मीदवार महाशयो, मैंने आप लोगों को जो कुछ कष्ट दिया हो, उसके लिए क्षमा कीजिए। मुझे इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी, जिसके हृदय में दया हो और साथ ही साथ आत्मबल भी हो। हृदय वही है जो उदार हो, आत्मबल वही है जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे। और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने पं. जानकीनाथ की तरफ देखा, उम्मीदवारों के दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, और इन आँखों में ईर्ष्या थी।

सरदार साहब ने फ़रमाया, "आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं जख्मी होने पर भी एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ावे, उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सतावेगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परंतु दया और धर्म के मार्ग से कभी न हटेगा।"

लेखक परिचय



प्रेमचंद जी का जन्म सन् १८९० में उत्तरप्रदेश के लमही गाँव में हुआ। आप के बचपन का नाम धनपतराय था। आप उर्दू में नवाबराय और हिंदी में प्रेमचंद के नाम से लिखते रहे। आप हिंदी के सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार हैं। आपने तीन सौ से ज्यादा कहानियाँ लिखी हैं। ये कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं।

इनकी पहली कहानी 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' है। गोदान, निर्मला, सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, प्रतिज्ञा, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन आदि आपके उपन्यास हैं। सन् १९३६ में प्रेमचंद स्वर्ग सिधार गये।

शब्दार्थ :

रियासत-राज्य, दीवान-प्रधानमंत्री, कैद-बंधन, नेकनामी-प्रसिद्धि, मरीज़-रोगी, हलचल-दौडधूप, शोरगुल; नसीब-भाग्य, किस्मत; सनद-प्रमाणपत्र, सर्टिफिकेट; चोगा-घुटनों तक का लंबा कुर्ता, अंगरखा-अचकन, एक प्रकार का वस्त्र जिसमें बाँधने के लिए बंद लगे रहते हैं, झंझट-कठिनाई,

मुसीबत; झुंझलाना-खीजना, चिढ़ना; भाँपना-पहचानना, फ़रमाना-कहना, मंदाग्नि- अजीर्ण, कब्ज।

मुहावरे :

दाग लगाना-कलंक लगाना; बदनाम होना
मिट्टी में मिलना-नष्ट होना; बर्बाद होना
नाक में दम करना - ख़ूब सताना या कष्ट देना

टिप्पणी :-

- १) 'बगुलों में हंस छिपा रहना' - अनेक अयोग्य व्यक्तियों में किसी एक योग्य व्यक्ति का छिपा रहना ।
- २) 'गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है' - बहुत प्रयत्न करने के बाद ही हमें अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त होती है।

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न :

१. रियासत देवगढ़ से कौन निवृत्त होना चाहते थे?
२. दीवान सुजानसिंह क्यों निवृत्त होना चाहते थे?
३. राजा साहब ने दीवान से किसे ढूँढ़ने के लिए कहा ?
४. दीवान सुजानसिंह ने दीवानी पद के लिए किसे चुना?

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

- १) रियासत देवगढ़ के दीवान का नाम क्या था?
- २) दीवान में कौन-से गुण थे?
- ३) रियासत देवगढ़ को किसकी ज़रूरत थी?
- ४) उम्मीदवारों में सबसे ज्यादा संख्या किन लोगों की थी?

- ५) उम्मीदवार कौन-सा खेल खेलने लगे ?
- ६) नाले में क्या फँस गया था?
- ७) किसान की मदद किसने की ?
- ८) दीवान किसे चुना गया?

III. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

- १) दीवान सरदार सुजानसिंह ने महाराज से क्या प्रार्थना की और क्यों?
- २) विज्ञापन के कारण देवगढ़ में कैसा वातावरण छा गया?
- ३) विज्ञापन में दीवान-पद के लिए किन-किन गुणों का उल्लेख किया गया था?
- ४) फैशनवालों ने खेलने के लिए किस खेल को चुना और क्यों?
- ५) नाले से गाड़ी निकालने में किसने मदद की और उसका फल क्या हुआ?

IV. किसने किससे कहा ? पाठ का नाम क्या है ?

- १) "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"
- २) "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"
- ३) "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

V. विलोम रूप लिखिए :

उपस्थित, नास्तिक, वीरता, सज्जन, स्वार्थ

VI. इनके पर्यायवाची शब्द लिखिए :

मरीज़, नसीब, लत, अनाज, दफ्तर, अवस्था

VII. पाठ से शब्द-युग्मों को पहचानकर लिखिए:

जैसे: हृष्ट - पुष्ट

१. भूल -
२. रहन -
३. आचार -
४. आदर -
५. नमाज़ -
६. पढ़े -
७. दौड़ -

VIII. 'हुक्का' पीने की लत बुरी है। इसी प्रकार और कौन-सी आदतें स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं - उनकी सूची लिखिए।

योग्यता विस्तार:

- * मुसलमान रमज़ान के महीने में रोज़ा रखते हैं। इस त्योहार के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
- * हंस पक्षी के विशेष गुणों के बारे में जानिए।

भाषा-बोध

मुहावरे और उनका अर्थ :

- | | | |
|-----------------------|---|-----------------------|
| १) अंगूठा दिखाना | - | इनकार करना |
| २) अंधा-धुंध | - | बिना सोचे-समझे |
| ३) अक्ल का अंधा | - | महा मूर्ख |
| ४) कमर सीधी करना | - | आराम करना |
| ५) कलेजा मुँह को आना | - | बहुत घबरा जाना |
| ६) खून पानी होना | - | व्यर्थ तकलीफ पहुँचाना |
| ७) गप-शप मारना | - | बेकार की बातें करना |
| ८) चोर पर मोर पड़ना | - | भारी पड़ना |
| ९) मरे को मारना | - | सताये हुए को और सताना |
| १०) हवा से बातें करना | - | बहुत तेज़ी से चलना |

पूरक वाचन

शिष्टाचार का महत्व

शिष्टाचार का अर्थ है-शिष्ट आचरण। शिष्ट का अर्थ है-अच्छा और आचरण का अर्थ है-काम करने का ढंग या व्यवहार। अच्छे व्यवहार को शिष्टाचार कहते हैं।

विनम्रता शिष्टाचार की पहली शर्त है। माता-पिता व शिक्षकों का सदा आदर करना चाहिए। उनके साथ विनम्रता का व्यवहार करना चाहिए। जब कोई बड़ा आदमी मिले तो उसका आदरपूर्वक अभिवादन करना चाहिए। बात करते समय 'जी हाँ' तथा 'जी नहीं' कहकर उत्तर देना चाहिए। बड़ों को केवल 'हाँ' या 'ना' कहना अशिष्टता है।

दो व्यक्ति आपस में बातें कर रहे हों, तो उनके बीच में बोलना भी अशिष्टता है। आयु में अपने से बड़े लोगों को हमेशा 'आप' कहकर संबोधित करना चाहिए। 'तुम' शब्द का केवल प्रयोग अपने बराबर वालों या अपने से छोटों के लिए ही किया जाता है।

किसी का नाम लिखते समय उसके पहले 'श्रीमान्', 'श्रीमती' या 'कुमारी' लगाना चाहिए। नाम के अंत में 'जी' लगाकर भी दूसरों के प्रति सम्मान प्रकट किया जा सकता है।

यदि कोई हमारे लिए कोई काम करे, तो उसका आभार मानना चाहिए। उसका आभार 'धन्यवाद' कहकर प्रकट किया जा सकता है। यदि हमसे कोई भूल हो जाए तो 'क्षमा कीजिए' कहकर अपनी भूल पर खेद प्रकट किया जा सकता है।

विनम्रता केवल वाणी में ही नहीं, व्यवहार में भी होना चाहिए। बड़ों की परवाह न करना, उनके सामने ठहाका लगाकर हँसना और उनसे जिद करना अशिष्टता है। बिना पूछे दूसरों की चीज़ें छूना या दूसरों के निजी पत्र पढ़ना भी अशिष्टता है।

किसी के घर या कमरे में प्रवेश करते समय दरवाज़ा खटखटाना चाहिए और पूछना चाहिए कि, "क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?" यदि आप ऐसा नहीं करते तो आप अशिष्टता का परिचय देते हैं।

'अनुशासन' शिष्टाचार का आधार है। समाज के नियमों और कानूनों का पालन करना चाहिए। पूजा-स्थल में जूते उतारकर ही प्रवेश करना चाहिए। सड़क पर नहीं खेलना चाहिए। अपना हर काम समय पर करना चाहिए। किसी काम को करने में आलस नहीं दिखाना चाहिए।

इसी प्रकार किसी की खिल्ली उड़ाना भी अशिष्टता है। पीठ पीछे किसी की निंदा करना भी अशिष्टता है। महिलाओं के प्रति सम्मान प्रकट करना शिष्ट आचरण का उदाहरण है। सहनशील व्यक्ति स्वभाव से ही शिष्ट होता है। अतः सहनशीलता का गुण धारण करना चाहिए।

प्रश्नों का उत्तर लिखिए:

१. शिष्टाचार का अर्थ क्या है?
२. किन-किनके साथ विनम्रता का व्यवहार करना चाहिए?
३. 'आप' और 'तुम' का प्रयोग कब करना चाहिए?
४. आभार तथा भूल कैसे प्रकट किया जा सकता है?
५. अनुशासन का पालन कैसे कर सकते हैं?
६. सहनशीलता का गुण किसलिए धारण करना चाहिए?

सूरदास के पद



-सूरदास

आशय: कवि सूरदास जी के अनुसार ईश्वर की कृपा से सभी असंभव कार्य संभव हो सकते हैं। यहाँ कृष्ण की बाल-क्रीड़ाओं का भी वर्णन किया गया है।

१. चरण-कमल बंदौ हरि-राई।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंगै, अँधे को सब कछु दरसाई।

बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।

‘सूरदास’ स्वामी करुणामय, बार बार बन्दौ तिहि पाई ॥



२. जसोदा हरि पालनै झुलावै

हलरावै दुलराई मल्हावै, जोइ सोइ कछु गावै ।

मेरे लाल को आवै निदरिया, काहे न आनि सुवावै ।

तु काहे नहिं बेगहिं आवै, तोको कान्ह बुलावै ।

कबहुँक पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै ।

इहि अंतर अकुलाई उठे हरि, जसुमति मधुरै गावै ।

जो सुख सूर अमर-मुनि दुरलभ सो नंद भामिनी पावै ।

कवि परचिय



सूरदास का जन्म सन् १४७८ में दिल्ली के पास सीही नामक ग्राम में सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका आवास स्थान रुनकता ग्राम बताया जाता है। कहा जाता है कि वे जन्मांध थे। सूरदास भक्तिकालीन कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि थे। सूर-काव्य का मुख्य विषय श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का भावात्मक चित्रण है। वल्लाभाचार्य जी ने इन्हें “अष्टछाप”

नामक कृष्ण भक्त समाज में सम्मिलित किया, जिसमें इन्हें उच्चतम स्थान प्राप्त था। सूरदास की कृतियाँ सूरसागर, सूर सारावली और साहित्य लहरी हैं। इनकी रचनाओं में सर्वत्र ब्रज भाषा का प्रयोग है।

शब्दार्थ :

बंदौ - वंदना करना, जाकी-जिसकी, पंगु-लंगड़ा, मूक-गूंगा, रंक-भिखारी, तिहि-उनकी, पाई-पाँव, चरण; हरि-कृष्ण, हलरावै-झुलाना, मल्हावै-पुचकारना, दुलराई-दुलारना, प्यार करना; अधर-होंठ, इहि अंतर-इसी बीच, अकुलाई-व्याकुल हो, नंद भामिनी-यशोदा।

१) **संदर्भ** : प्रस्तुत अंश सूरदास द्वारा रचित है। यह 'सूरसागर' के विनय संबंधी पदों से गृहीत है। यह भक्तिपरक पद है।

भावार्थ - कवि ने श्री हरि (कृष्ण) की महिमा का गान करते हुए कहा है कि जिस पर श्री हरि की कृपा हो जाती है उसके लिए असंभव भी संभव हो जाता है। लूला-लंगड़ा मनुष्य भी पर्वत को लाँघ सकता है। अंधे को सब कुछ देखने की क्षमता प्राप्त हो जाती है। बहरा सुनने लगता है। गूँगा बोलने लगता है। कंगाल (भिक्षुक) भी राज-छत्र धारण कर लेता है। ऐसे करुणामय प्रभु श्री कृष्ण की चरण वंदना कौन नहीं करेगा? अर्थात् श्री हरि की स्तुति हर व्यक्ति बार-बार करेगा।

२) **संदर्भ** : प्रस्तुत पद सूरदास रचित 'सूरसागर' के बालकृष्ण की लीला संबंधी पदों से गृहीत है।

भावार्थ : सूरदास जी ने बालकृष्ण की चेष्टाओं का वर्णन करते हुए कहा है कि माता यशोदा हरि (श्याम) को पालने में झुला रही हैं। कभी झुलाती हैं, कभी प्यार से पुचकारती हैं, कुछ गाती हैं। वे गाती हुई कहती हैं कि 'हे निद्रा देवी! तू शीघ्र मेरे लाल के पास आ जा और उन्हें सुला दे। तू शीघ्र क्यों नहीं आती? तुझे कान्हा बुला रहे हैं।' कृष्ण कभी पलकें मूँद (बंद) लेते हैं तो कभी पलक झपकाते हैं, कभी होंठ हिलाते हैं। इसी बीच कृष्ण व्याकुल होकर जाग जाते हैं। माता पुनः उन्हें सुलाने का प्रयत्न करने लगती है। सूरदास कहते हैं कि जो सुख देवताओं और मुनियों को भी दुर्लभ है वही सुख कृष्ण के बाल रूप में उनकी चेष्टाओं को देखकर नंद भामिनी (यशोदा) प्राप्त कर रही हैं। अर्थात् कृष्ण की बाल लीलाओं को देख यशोदा मैया को परमानंद का अनुभव प्राप्त हो रहा है।

I. मौखिक प्रश्न:

- १) हरि की कृपा से लंगड़ा क्या कर सकता है ?
- २) सिर पर छत्र कौन धारण करता है ?

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

- १) सूरदास ने किस करुणामय की वंदना की है?
- २) माता यशोदा किसे सुला रही हैं ?
- ३) माता किसे शीघ्र बुला रही हैं ?
- ४) नंद भामिनी कौन है ?

III. प्रस्तुत पद्य के आधार पर हरि की बाल चेष्टाओं का वर्णन कीजिए।

IV. भावार्थ लिखिए:

चरण कमल.....तिहि पाई।

V. शब्दों की खड़ीबोली रूप लिखिए:

जैसे: जाकी - जिसकी

१. कछु -
२. पुनि -
३. तिहि -
४. जसोदा -
५. काहे -
६. कान्ह -

VI. हरि की वंदना बहुत सारे करते हैं। आप प्रतिदिन किस किसकी वंदना करते हैं? वंदना करने के दो-दो कारण लिखिए।

VII. पर्यायवाची शब्द लिखिए:

१. कृपा -
२. गिरि -
३. लाल -
४. बेग -
५. अधर -
६. भामिनी -

योग्यता विस्तार :

सूरदास के समकालीन कवियों और उनकी कृतियों की एक सूची बनाइए।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक



- संकलित

आशय : भारत देश में अनेक देशभक्तों का जन्म हुआ जिन्होंने देश को स्वतंत्र कराने में अपना योगदान दिया। उनमें से एक हैं लोकमान्य तिलक जी। इस पाठ द्वारा तिलक जी की देशभक्ति का परिचय प्राप्त होता है।

"स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, उसे मैं लेकर रहूँगा।"- इस नारे को बुलंद करने वाले हमारे नेता थे लोकमान्य बालगंगाधर तिलक। तिलक का जन्म २३ जुलाई, सन् १८५६ में रत्नगिरि जिले के चिखली गाँव में हुआ था। उनके पिता गंगाधर पंत संस्कृत के अध्यापक थे और स्वाध्याय-प्रेमी थे। उन्होंने तिलक के चरित्र निर्माण और शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। तिलक पढ़ाई-लिखाई में तेज़ और अपनी धुन के पक्के थे। वे इतने तेज़ थे कि गणित के प्रश्नों के उत्तर प्रायः मौखिक दिया करते थे।

गंगाधर पंत तिलक को घर पर संस्कृत पढ़ाते थे। संस्कृत के श्लोक सिखाने का उन्होंने एक अनोखा ढंग अपनाया था। वे एक कागज के टुकड़े पर संस्कृत का श्लोक लिखकर एक पैसा रख देते थे। जब तिलक इस श्लोक को याद कर लेते तो वह पैसा उनको मिल जाता। तिलक ने इस तरह बहुत-से संस्कृत के श्लोक याद कर लिए थे।

एक दिन की बात है, गंगाधर पंत संस्कृत की एक प्रसिद्ध पुस्तक बाणभट्ट की 'कादंबरी' पढ़ रहे थे। तिलक की भी इच्छा उसे पढ़ने

की हुई। उन्होंने पिता से वह पुस्तक माँगी। पिता को आश्चर्य हुआ। तिलक की परीक्षा लेने के लिए उन्होंने कहा- “मैं गणित का एक प्रश्न देता हूँ। यदि तुम उसे हल कर दोगे तो तुम्हें यह पुस्तक पढ़ने के लिए दे दूँगा।”

गणित का प्रश्न जटिल था। वे दिन भर उस प्रश्न का हल करते रहे। शाम को जब उनके पिता टहलकर वापस लौटे तब उन्होंने उस हल किए प्रश्न को दिखाया। पिता ने प्रसन्न होकर बाणभट्ट की ‘कादंबरी’ उन्हें पढ़ने को दे दी।

कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने मित्रों की सहायता से पुणे में ‘न्यू इंग्लिश स्कूल’ की स्थापना की। एक साल बाद अपने मित्र गोपाल गणेश अगरकर की मदद से ‘केसरी’ तथा ‘मराठा’ नाम के दो समाचार पत्र निकाले। उन्होंने अपने इन समाचार पत्रों को निर्भीकता से लिखा तथा सरकार को खूब फटकारा। तिलक पर मुकदमा चलाया गया। न्यायाधीश ने उन्हें छह साल की कड़ी सज़ा सुनाई। न्यायाधीश के सामने उन्होंने निर्भीकता से कहा - “मुझे भले ही दोषी ठहराया जाए, लेकिन मेरा विश्वास है कि अंग्रेज़ों को एक दिन भारत से जाना होगा। सरकार के अन्याय के आगे सिर झुकाना मैं पाप समझता हूँ। स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर ही रहूँगा।” सरकार ने उन्हें मांडले (रंगून) की जेल भेज दिया। यहाँ छह वर्षों की कैद में उन्होंने ‘गीतारहस्य’ नाम का एक महान ग्रंथ लिखा।

देश को स्वतंत्र करना उनका लक्ष्य था। एक बार एक सज्जन ने उनसे पूछा - “जब स्वराज्य होगा तब भारत के मंत्रीमंडल में आप क्या बनना पसंद करेंगे? प्रधानमंत्री या गृहमंत्री?”

तिलक ने कहा - "मुझे अपने देश को आज़ाद कराना है। देश को स्वराज्य मिल जाए, देश की जनता देश को आगे बढ़ाए। मैं कहीं भी गणित का अध्यापक बनकर देश की सेवा करना पसंद करूँगा।"

1 अगस्त सन् १९२० को मुंबई में उनकी मृत्यु हुई। शोक के इस अवसर पर राष्ट्रपिता गाँधीजी ने कहा - "तिलक जी का हिंदुस्तान से, हिंदुस्तान की जनता से और हिंदुस्तान की जनता का उनसे अटूट प्रेम था। स्वराज्य का जितना जप उन्होंने किया, उतना किसी और ने नहीं किया।"

शब्दार्थ:

नारा-एक सामूहिक आवाज़, घोष; चरित्र निर्माण-अच्छे आचरण की रचना, तेज़-होशियार, अनोखा-विचित्र, अद्भुत; जटिल-कठिन, मदद-सहायता, फटकारना-जोर से डाँटना, कड़ी-सख्त, दोषी-अपराधी, स्वराज्य-स्वाधीनता, जन्मसिद्ध-जन्म से प्राप्त, शोक-दुख, अटूट- न टूटनेवाला, अविरत, मजबूत।

महावरा: धुन के पक्के - परिपक्व विचारवाले

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न:

१. बाल गंगाधर तिलक का जन्म कहाँ हुआ?
२. 'कादंबरी' के लेखक कौन थे?
३. तिलक जी का देहांत कब हुआ?

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

१. तिलक जी का जन्म कब हुआ ?
२. तिलक जी के पिताजी का नाम क्या था?
३. गणित का प्रश्न कैसा था?
४. न्यायाधीश ने तिलक जी को कितने सालों की सज़ा सुनाई?

III. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए:

१. बालगंगाधर तिलक ने कानून की परीक्षा के बाद क्या-क्या किया?
२. तिलक जी के पिताजी के बारे में लिखिए।
३. तिलक जी को श्लोक याद कराने के लिए उनके पिताजी क्या करते थे?
४. तिलक जी की परीक्षा लेने के लिए उनके पिताजी ने क्या कहा?
५. न्यायाधीश के सामने तिलक जी ने निर्भीकता से क्या कहा?
६. तिलक जी ने किसी एक सज्जन के प्रश्न का क्या उत्तर दिया?
७. तिलक जी के बारे में राष्ट्रपिता गाँधीजी का क्या कहना था?

IV. खाली जगह भरिए:

१. गंगाधर पंत के अध्यापक थे।
२. तिलक में तेज़ थे।

३. पिता ने होकर बाणभट्ट की पुस्तक पढ़ने को दे दी।

४. स्वराज्य मेरा अधिकार है।

५. सरकार ने तिलक जी को की जेल में भेज दिया।

V. वाक्य बनाइए:

१. स्वाध्याय

२. प्रसिद्ध

३. विश्वास

४. मुकदमा

VI. विलोम शब्द लिखिए:

१. जन्म X

२. जटिल X

३. सज्जन X

४. प्रश्न X

५. आज़ाद X

VII. पर्यायवाची शब्द लिखिए:

१. स्वतंत्र - _____
२. पिता - _____
३. मित्र - _____
४. मृत्यु - _____
५. हिंदुस्तान - _____

VIII. इन शब्दों के दो अलग अर्थ हैं। अर्थ समझकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

१. तेज़: _____

२. हल: _____

३. दो: _____

IX. गंगाधर पंत जी संस्कृत के अध्यापक थे। आपके स्कूल में
किन-किन विषयों के अध्यापक हैं और उनके नाम क्या हैं?

- सूची बनाइए:

विषय

अध्यापक

योग्यता विस्तार:

बाणभट्ट संस्कृत के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। इसी प्रकार हिंदी के कुछ
प्रसिद्ध साहित्यकारों की सूची बनाइए

पन्ना धाय का त्याग



- बालशौरि रेड्डी

आशय : पन्ना धाय एक ऐसी महिला थी जो अपनी निष्ठा एवं त्याग के लिए प्रसिद्ध थी। इस एकांकी द्वारा पन्ना धाय के महान् गुणों का परिचय कराया जा रहा है।

पन्ना - धाय

बाँदी - नौकर

उदय सिंह - संग्राम सिंह का पुत्र

बनवीर - मेवाड़ का राजा

पन्ना का बेटा

(दाई पन्ना राजकुमार उदय सिंह को सुला रही है। इतने में बाँदी आकर समाचार देता है कि राजकुमार को मारने के लिए बनवीर हाथ में तलवार लिए चला आ रहा है। दाई पन्ना राजकुमार को बचाने के प्रयत्न में लग जाती है।)

पन्ना - (बाँदी को पास बुलाकर) बाँदी ! बाँदी ! इधर आओ तो ।

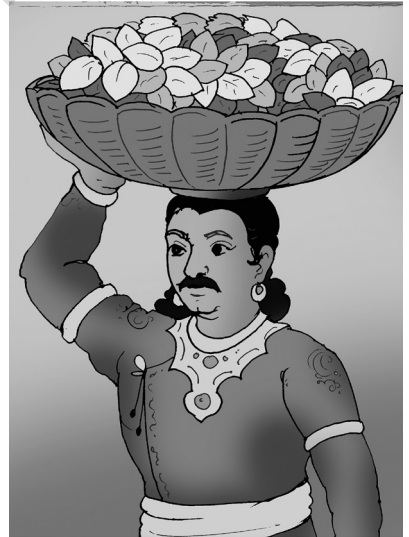
बाँदी - क्या आज्ञा है, माँ !

पन्ना - उदयकुमार के कपड़े उतारकर मेरे बेटे को पहना दो !

बाँदी - जो आज्ञा, माई !

(उदय के कपड़े उतारकर पन्ना के लड़के को पहनाता है।)

- पन्ना - जल्दी एक टोकरी लाओ, उसमें थोड़े-से पत्तल भी बिछा दो।
- बाँदी - (टोकरी लिए आता है।) माई जी, लीजिए।
- पन्ना - उसमें कपड़े बिछाकर उदय को लिटा दो।
- बाँदी - (कपड़े बिछाकर उदय को टोकरी में लिटा देता है।) माई, ऊपर कुछ पत्तल डाल दूँ। वरना सब कोई शक करेंगे।
- पन्ना - हाँ, हाँ, तुमने ठीक कहा। जल्दी करो, बनवीर के आने का वक्त हो रहा है।
- बाँदी - (टोकरी में उदय पर कुछ पत्ते ढँक देता है।)
तो माई, क्या मैं चल दूँ?
- पन्ना - कहाँ पर ले जाओगे ?
- बाँदी - जहाँ ले जाने को आप कहेंगी।
- पन्ना - राजकुमार के साथ नमकहरामी नहीं करोगे न।
- बाँदी - माई जी, मेरे शरीर में प्राण रहते कभी ऐसा नहीं करूँगा।
- पन्ना - बाँदी ! देखो, इस वक्त मेवाड़ के राजकुमार अनाथ हैं। उनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। राजभक्ति सबसे बड़ी चीज़ होती है।
- बाँदी - माई जी, हम पीढ़ी दर पीढ़ी राजाओं की सेवा करते आ रहे हैं। हमने कभी विश्वासघात नहीं किया है।



पन्ना - बाँदी, तुम पर मेरा विश्वास है।

बाँदी - तो आज्ञा दीजिए, माई जी !

पन्ना - तुम गुप्त द्वार से चले जाओ
और नदी के किनारे टोकरी
लिए मेरा इंतज़ार करो।



लेकिन याद रखना कि यह
खबर हम दोनों के सिवा तीसरे के कान न पहुँचे।

बाँदी - अच्छी बात है, माई ! अब मैं चलता हूँ। देरी होने से
खतरा है। बनवीर आते ही होंगे।

पन्ना - अच्छा, चलो ! राजकुमार को कोई तकलीफ़ न हो।

बाँदी - अच्छा, माई जी !

(चलने लगता है। पन्ना एक बार टोकरी की तरफ, फिर
बाँदी की ओर देखती है। बाँदी सर झुकाकर नमस्कार करके
चल देता है।)

पन्ना - (मन में) बदमाश बनवीर आता ही होगा। वह नमकहराम
कृतघ्न है।

(इतने में कुछ दूर पर बनवीर के आने की आहट सुनाई
देती है। पन्ना पालने के पास पहुँचकर एक बार अपने बेटे
को प्यार भरी नज़र से देखती है। फिर कपड़ा ढँककर पालना
झुलाने लगती है। इतने में बनवीर द्वार तक पहुँचता है।)

बनवीर - (कड़कती आवाज़ में) पन्ना, राजकुमार कहाँ है ?

पन्ना - (पालने की ओर संकेत करते हुए) देख तो रहे हो। लेकिन इस अबोध शिशु ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, बनवीर!

बनवीर - इसका जवाब मेरी यह तलवार देगी। तुम्हें समझाने की ज़रूरत है। हम नहीं समझते। आखिर तुम कौन हो यह पूछनेवाली? एक दासी की महाराजा के सामने बोलने की हिम्मत !

पन्ना - बनवीर, सावधानी से बोलो।

बनवीर - वरना क्या करोगी ?

पन्ना - तुम्हें क्या करना है ? शर्म नहीं आती ? एक नारी का अपमान करना नीचता है।

बनवीर - ज्यादा बकवास करोगी तो तुम्हारा काम भी तमाम कर दूँगा। दिखाओ, उदय कहाँ है ?

पन्ना - उदय ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा ?

बनवीर - मैं सारे राजपरिवार का संहार करके आराम की नींद लेना चाहता हूँ। अभी मुझे भय बना रहता है कि उदय के बड़े होने पर वह अपना राज्य वापस लेगा। इसलिए मुझे रात-दिन चैन ही नहीं है।

पन्ना - यह राज्य तो उदय का है। उसको ही मिलना चाहिए। स्वामी-द्रोह करना पाप है न बनवीर ?

बनवीर - (हँसते हुए) स्वामी-द्रोह ! मैंने राज्य को इतने दिनों से दुश्मनों के हमलों से बचाया और इसे बढ़ाया। अब यह राज्य उदय का है ? यह कहाँ की नीति है ? यदि उसीका राज्य है तो वह आकर बचा ले।

पन्ना - वह बच्चा है। अभी पौधा है। बढ़कर सब कुछ करेगा।
तुम तो उसकी ओर से राज्य चला रहे हो। वह तुम्हारा भी
स्वामी है।

बनवीर - न वह मेरा स्वामी है न बन ही सकता है। मैं अभी उस
पौधे को तोड़ देना चाहता हूँ। बढ़ कर पेड़ होने पर तोड़
देना मुश्किल है।

पन्ना - नीच कहीं का ! तुम्हारे मुँह से ये बातें कैसे निकल रही
हैं ! जिसका राज्य भोग रहे हो, उसीको मारने पर तुले
हुए हो!

तुमसे पशु अच्छे हैं।

बनवीर - (गरजकर) जानती हो, तुम किससे बात कर रही हो !
मैं इस समय महाराज हूँ। तुम दासी, केवल दासी हो।

पन्ना - जानती हूँ, खूब जानती हूँ। मैं एक कायर से, एक नीच
से बात कर रही हूँ।

बनवीर - (गुस्से से) क्या कहा ? मैं कायर हूँ, नीच हूँ ?

पन्ना - (धीरता से) हाँ, हाँ ! मैं अब भी कहती हूँ। सच्चे क्षत्रिय
कभी कमजोरों पर हथियार या हाथ नहीं चलाते। नीच इसलिए
हो कि तुम ऐसा विश्वासघात करने जा रहे हो।

बनवीर - लगता है, तुम्हारा हौसला बढ़ता जा रहा है। अभी उसे ठंडा
कर देता हूँ। बताओ, उदय कहाँ है?

पन्ना - (नर्म होकर) बनवीर, उस पर दया करो, वह अबोध बच्चा है। मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ।

बनवीर - हूँ ! दया नामक कोई चीज़ मेरे दिल के भीतर है ही नहीं। मैं सिर्फ अपने सुख और आराम की बात जानता हूँ। मैं अपना भविष्य बना लेना चाहता हूँ।

(यह कहकर बनवीर उदय की ओर नंगी तलवार लिए आगे बढ़ता है। पन्ना रास्ता रोके खड़ी हो जाती है। बनवीर उसे ढकेलकर पालने के नज़दीक पहुँच जाता है। उदय को सोते देख तलवार उठाने लगता है।)

पन्ना - (रोकते हुए) बनवीर, उदयकुमार अनाथ है। उसकी रक्षा करो। जिंदगी भर तुम्हारा नाम जपा करूँगी।

बनवीर - वाह, कोई ऐसा भी मूर्ख है जो हाथ लगे शिकार को छोड़ देता है? अभी मैं एक झटके में उदय को खतम कर सकता हूँ। इसके बड़े होने पर तो भयंकर लड़ाई करनी पड़ेगी। इस मौके को मैं कैसे हाथ से जाने दूँगा ?

पन्ना - लेकिन याद रखो कि तुम्हारा नाम इतिहास में हमेशा के लिए कलंकित ही रहेगा।

बनवीर - उसकी कौन परवाह करता है ? मैं अपनी ताकत से सारे मेवाड़ को अपनी ओर कर लूँगा। सभी मेरी प्रशंसा के गीत गाएँगे। तुम नहीं जानती पन्ना, जिसके हाथ में हुकूमत है, उसके सामने सभी सर झुकाते हैं। तुम औरत हो, राजनीति की बातें क्या जानो ?

- पन्ना - बनवीर, औरत राजनीति की बातें भले ही न जानती हो, लेकिन वह इस विश्वासघात को कभी सहन नहीं कर सकती है।
- बनवीर - हूँ ! सहन नहीं कर सकती है तो करेगी क्या ? रोती रहेगी। औरत इससे ज्यादा और क्या कर सकती है ? बेचारी वह आँसू बहाना मात्र जानती है।
- पन्ना - याद रखो बनवीर, औरत के आँसू के समुंदर में सारा संसार ही डूब जाता है। सीता के आँसू बहाने से लंका का नाश हो गया। द्रौपदी के आँसू गिराने से सारे कौरव कुल का विनाश हो गया। और और
- बनवीर - अरे, उन पुराणों की औरतों की बात क्या कहती हो ! वे तो रोना जानती थीं। और क्या कर सकीं। तुम भी अपने को सीता और द्रौपदी के समान मानती हो ?
- पन्ना - मैं यह नहीं कहती कि मैं बड़ी पतिव्रता हूँ। लेकिन मैं यह कहती हूँ कि औरत को दुखाना ठीक नहीं।
- बनवीर - तुम्हारे उपदेशों से मैं तंग आ गया। मुझे उपदेश देने की हिम्मत करती हो ? चल, हट। डाइन कहीं की।
- पन्ना - बनवीर, मुझे कुछ भी कहो, लेकिन उदय को बचाओ। राणा संग्राम सिंह ने तुम्हारे प्रति कितने उपकार किए ? अपने स्वामी को एक बार याद करो।
- बनवीर - उपकार किए हैं। उपकार ! वे तो हमको अपना सेवक बनाए हुए थे। आज मैं स्वामी बन गया हूँ। यह सब अपनी ताकत के बल पर हुआ। (यह कहकर वह आगे बढ़ता है। पन्ना

उसे रोकने की कोशिश करती है। उसे ढकेलकर बनवीर आगे बढ़ता है। पालने में उदय की पोषाक में सोनेवाले पन्ना के बेटे को उदय ही समझकर उस पर तलवार चलाता है। उस बच्चे के दो टुकड़े हो जाते हैं।

बनवीर - (अट्टहास करते हुए) रास्ते का काँटा दूर हो गया। पन्ना, तुम अब अपने भाग्य पर रोओ। अब मैं चला। (तेजी से चला जाता है।)

पन्ना - (दौड़कर पालने के समीप पहुँच जाती है। बच्चे का मुँह चूमते हुए) बेटा, तुमने अपनी जान देकर अपने स्वामी को बचाया। (रो पड़ती है, फिर संभलकर) तुम इस नीले आकाश में तारे की भाँति चमकते हमेशा याद किए जाओगे। मेरा प्रभु बच गया। मेरा स्वामी बड़ा होकर उस दुष्ट को दंड देगा। मेरा स्वामी ! (चिल्लाती रहती है।)

(पर्दा गिरता है।)

लेखक परिचय :

बालशौरि रेड्डी जी का जन्म आंध्रप्रदेश के गोल्लन गूडूर, कडपा (जि) में सन् 1928 को हुआ। 'सादा जीवन और उच्च विचार' की साकारमूर्ति बालशौरि रेड्डी बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। हिंदीतर भाषा भाषी होने पर भी हिंदी साहित्य को उनका योगदान अपार है। वे सुप्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार, पत्रकार, आलोचक, अनुवादक और निबंधकार हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर अनेक शोध-ग्रंथ प्रस्तुत किये

गए हैं। वे अनेक पुरस्कार, सम्मान और उपाधियों से सुशोभित हैं। हिंदी 'चंदमामा' मासिक पत्रिका के संपादक के रूप में वे बहुधा जाने जाते हैं।

उनके प्रमुख उपन्यास हैं - शबरी, ज़िन्दगी की राह, यह बस्ती : ये लोग, भग्नसीमाएँ, बैरिस्टर, स्वप्न और सत्य, प्रकाश और परछाई, धरती मेरी माँ, प्रोफेसर, धरती का पुत्र, दावानल, लकुमा।

शब्दार्थ : चैन - आराम, सुख ; पौधा - छोटा पेड़, नमकहरामी - कृतघ्नता, अबोध - नादान, हौसला - हिम्मत, धैर्य; स्वामी-द्रोह - मालिक से विश्वासघात, रास्ते का काँटा - रुकावट, हुकूमत - सत्ता, शासन; पालना - बच्चों को सुलाने का झूला।

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न :

- १) उदय सिंह की रक्षा कौन करता है ?
- २) उदय सिंह किसके पुत्र थे ?
- ३) उदय सिंह को किसमें लिटाया गया ?
- ४) मेवाड़ का कृतघ्न राजा कौन था ?
- ५) पन्ना धाय के अनुसार मेवाड़ का पौधा कौन है ?

II. इन प्रश्नों का उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :

- १) पन्ना और बाँदी के बीच के संवाद को लिखिए।
- २) राजकुमार को पन्ना ने कहाँ भेजा?
- ३) बनवीर उदय को क्यों मारना चाहता था?
- ४) पन्ना ने बनवीर को समझाने का प्रयास कैसे किया?
- ५) बनवीर ने पन्ना के बेटे का वध क्यों किया?

III. पन्ना की राज-भक्ति पर पाँच-छः वाक्य लिखिए।

IV. समानार्थक शब्द लिखिए :

शक	-	याद	-
नमस्कार	-	नारी	-
सर	-	पत्तल	-

V. विलोमार्थक शब्द लिखिए :

विश्वास	X	कृतघ्न	X
जवाब	X	शर्म	X
पाप	X	बढ़ाना	X
कायर	X	प्रशंसा	X

VI. एक शब्द लिखिए :

जो युद्ध भूमि से भाग जाता हो :

जिसके माँ-बाप न हो :

जो किये गये काम पर विश्वास न रखता हो :

VII. अन्य लिंग शब्दों को पाठ से ढूँढ़कर लिखिए:

- | | |
|----------------|----------------|
| १. राजकुमारी - | २. बेटी - |
| ३. दास - | ४. क्षत्राणी - |
| ५. आदमी - | ६. स्वामिनी - |

VIII. अन्य वचन रूप लिखिए:

१. कपडा -
२. पौधा -
३. तारा -
४. चीज़ -
५. नज़र -
६. बात -
७. नारी -
८. नीति -

विशेष सूचना: 'प्राण' शब्द सार्वकालिक बहुवचन शब्द है।

योग्यता विस्तार :

स्वामी-निष्ठा पर आधारित अन्य ऐतिहासिक एकांकी को पढ़िए।

रचना

पारिवारिक पत्र

किसी ऐतिहासिक स्थान की यात्रा पर जाने के लिए पैसे माँगते हुए अपने पिताजी के नाम एक पत्र लिखिए।

दिनांक.....

कल्पना

साईंज्ञान पाठशाला

मैसूरु

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र मिला। आप सबका कुशल समाचार पढ़कर बड़ी खुशी हुई। बहन की पढ़ाई कैसी चल रही है? हमारे विद्यालय से शिक्षक एवं विद्यार्थी शैक्षणिक यात्रा पर हंगी जा रहे हैं। मैं भी उनके साथ जाना चाहती हूँ। इसलिए यदि आप मुझे १००० रुपए भेजेंगे तो मैं इस यात्रा के लिए अपना नाम दे दूँगी।

आशा है, आप मुझे लौटती डाक से पैसे भेजेंगे। माँ को मेरा सादर प्रणाम।

पत्र की प्रतीक्षा में,

आपकी बेटी,

कल्पना

सेवा में,

धनराज

१२२/१, कृषि नगर,

धरवाड

लोकोक्तियाँ

- १) अक्ल बड़ी या भैंस _____
शारीरिक शक्ति से बुद्धि श्रेष्ठ है।
- २) अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता _____
अकेला आदमी कठिन और बड़ा काम नहीं कर सकता।
- ३) अधजल गगरी छलकत जाए _____
अधूरा ज्ञान पाकर इतराना।
- ४) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे _____
दोषी व्यक्ति निर्दोष पर दोष लगाए। अपराध होने पर लज्जित होने के बजाय अकड़ना।
- ५) ऊँची दुकान फीका पकवान _____
दिखावा ही दिखावा / आडंबर ही आडंबर।
- ६) एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है _____
एक बुरा मनुष्य सारे समाज को कलंकित करता है।
- ७) एक हाथ से ताली नहीं बजती _____
दोनों पक्षों का दोष होना।
- ८) गंगा गए गंगादास यमुना गए यमुनादास _____
अवसरवादिता।
- ९) घर का भेदी लंका ढावे _____
आपसी फूट अत्यधिक हानिकारक होती है।

१०) चट मँगनी पट ब्याह _____

शीघ्रता से प्रस्तावित कार्य का संपन्न हो जाना।

११) जैसा देश, वैसा भेष _____

जहाँ रहे, वहाँ का रिवाज अपनावे।

१२) एक अनार सौ बीमार _____

चीज़ थोड़ी हो और उसकी ज़रूरतवाले ज़्यादा हों।

१३) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद _____

मूर्ख, गुणों का महत्व नहीं समझता।

१४) मुँह में राम बगल में छुरी _____

दिखावटी सज्जनता।

१५) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का _____

जो कहीं का नहीं / जिसका कहीं आदर नहीं।

@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED